**समय : ३ घंटे** **पूर्णांक : ७५**

**सुचना : १. सभी प्रश्न अनिवार्य है |**

**२. सभी प्रश्नों के लिए अंक समान है |**

**३. उत्तर पत्रिका में प्रश्न क्रमांक व उप क्रमांक अवश्य लिखें |**

**प्रश्न १. निम्नलिखित में से किन्ही दो अवतरण की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए |** **३०**

**(क)** "राजाकइ बारि घुर्यारि निसाण।
मनमाहे हरषियउ बीसल चहूआंण।
परणियउ राजा भोज कइ।
म्हाकइ अंचल बंधीय राजकुमारि।
सफल दिहाडउ आजकड।
जो घरि आविस्यइ जाति पमारिं ॥ भु.॥"

**अथवा**

**(ख)** "साधो, यह तन ठाठ तँबूरे का।
ऍचत तार मरोरत खूँटी, निकसत राग हजूरे का।
टूटे तार बिखरगे खूँटी, हो गया धूरम-धूरे का।
कहँ कबीर सुनो भाई साधो, अगम पंथ काई सूरे का ॥"

**अथवा**

**(ग)** सावन बरस मेह अति पानी |भरनि परी,हाँ बिरह झुरानी ||
लाग पुनरबसु पीउ न देखा |भइ बाउरि,कहँ कंत सरेखा ||
रकत कै आँसू परहि भुई टूटी| रेंगि चली जस बीर बहूटी ||
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला |हरियरि भूमि कुसुम्भी चोला ||
हिय हिंडोल अस डोलै मोरा |बिरह झुलाइ देइ झकझोरा ||
बाट असूझ अथाह गंभीरी |जिउ बाउर,भा फिरै भंभीरी ||
जग जल बूड जहाँ लगि ताकी |मोरि नाव खेवक बिनु थाकी ||

**प्रश्न २. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए |** **३०**

**(च)** 'बीसलदेव रासो' के काव्य सौन्दर्य और उसकी भाषा का समीक्षात्मक अध्ययन कीजिए |

**(छ)** कबीर के काव्य में सामाजिक तत्वों की अवधारणा किस प्रकार वर्णित हुई है ?उदहारण सहित समझाईए |

**(ज)** जायसी के काव्य में बारह मांसा वर्णन के माध्यम से प्रकृति और प्रेम के संयोजन को विश्लेषित कीजिए |

**प्रश्न ३. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए|** **१५**

**(प)** प्राचीन कालीन काव्य और बीसलदेव रासो

**(फ)** कबीर की काव्य भाषा

**(ब)** जायसी की प्रेम साधना

*********



XSAGARDADMINYD9101CXSAGARDADMINYD9101C